



जवाहर कृषि संदेश



वर्ष : 8 अंक : 17 & 18 कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

अक्टूबर 2015 - मार्च 2016

विशेष कृषि संदेश ...

फसल उत्पादन हेतु बीज एक महत्वपूर्ण एवं गुणवत्तापूर्ण आदान है। शुद्ध बीज किसी भी फसल की उत्पादकता एवं गुणवत्ता के लिए सर्वोपरि है। यह निश्चित सत्य है कि सामान्य श्रेणी के बीज की बुवाई करके अच्छी फसल नहीं ली जा सकती परन्तु उत्तम एवं शुद्ध बीज के उपयोग से फसल की उत्पादकता में 20 प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती है। एक कहावत है कि “उन्नत शुद्ध बीज का मूल्य नहीं, गुण देखना चाहिए” किसी भी फसल के अधिक उत्पादन एवं गुणवत्ता के लिए अनुवांशिक तथा भौतिक रूप से शुद्ध एवं स्वास्थ्य बीज, जिसकी अंकुरण क्षमता मानक स्तर की है अच्छा बीज होता है। उन्नत किस्म के बीजों की श्रेणियां इस प्रकार हैं।

नाभिकिय बीज: यह बीज केवल वैज्ञानिक प्रजनक द्वारा उत्पादित उन्नत किस्म का वह प्रारम्भिक स्रोत बीज है जिसे विशेष निगरानी में प्रतिवर्ष निरंतरता बनाये रखने के लिए मुख्य स्रोत के रूप में तैयार किया जाता है।

प्रजनक बीज: नाभिकीय बीज के उत्पादित द्विगुणित बीज को प्रजनक बीज कहते हैं। इसे भी विशेष सावधानी तथा तकनीकी विधि से तैयार किया जाता है।

आधार बीज: प्रजनक बीज से उत्पादित बीज को आधार बीज कहते हैं। इसकी अवस्था एक या दो आवश्यकतानुसार हो सकती है जैसे आधार बीज-I एवं आधार बीज-II इसे बीज निगम संस्थानों के प्रक्षेत्रों पर पृथकरण दूरी व अन्य सावधानियों से उगाया जाता है। इसे भौतिक शुद्धता, स्वस्थता, अनुवांशिक शुद्धता और न्यूनतम अंकुरण क्षमता के पारित होने पर पीले रंग का प्रमाण पत्र लेवल दिया जा रहा है।

प्रमाणित बीज: आधार बीज से बहुगुणित करने के लिए उत्पादित बीज प्रमाणित बीज कहलाता है। इसे आधार बीज से पंजीकृत कृषकों के प्रक्षेत्रों पर सभी सावधानी एवं बीज नियमों का पालन करते हुए उत्पन्न किया जाता है। प्रमाणित बीज ही कृषकों को उपलब्ध हो पाता है।

अच्छे बीज के लक्षण: बीजों में किसी दूसरी फसल या खरपतवारों के बीजों का मिश्रण नहीं होना चाहिए। उसमें कंकड़, पत्थर, धूल मिट्टी, भूसा आदि नहीं हाना चाहिए।

बीज की भौतिक शुद्धता: किसी भी फसल की किस्म के बीजों में दूसरी फसल या खरपतवार के बीजों का मिश्रण नहीं होना चाहिए।

बीज की अंकुरण क्षमता: किसी भी फसल की किस्म के बीजों का मूल्यांकन उसकी अंकुरण क्षमता पर निर्भर करता है। इसलिए निर्धारित मानकों की अंकुरण क्षमता वाले बीज का उपयोग करना चाहिए।

बीज की जीवन क्षमता: सामान्यतया एक परिपक्व बीज चमकीला, साफ तथा पुष्ट होता है और अपरिपक्व बीज सिकुड़े, छोटे तथा बदरंग होते हैं। बीज का भ्रूण चोटग्रस्त नहीं होना चाहिए। बीज की जीवन क्षमता, अधिक नमी तथा ताप पर भंडारण करने एवं कीड़ों द्वारा नुकसान पहुंचाने से समाप्त हो जाती है।

सफल प्रयास ...

5 दिसम्बर 2015 को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर जबलपुर जिले के 1200 से अधिक किसान के खेत की मिट्टी नमूना जाँच कर प्रत्येक खेत का “मृदा स्वास्थ्य कार्ड” कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किया गया। जिसका वितरण जबलपुर जिले के माननीय सांसद श्री राकेश सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय विधायक श्री इंदू तिवारी, श्रीमति प्रतिभा सिंह एवं जबलपुर जिले के कलेक्टर श्री एस.एस. रूपला की उपस्थिति में किया गया। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. व्ही.एस. तोमर, संचालक विस्तार सेवायें, डा. पी.के. बिसेन सहित विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं वैज्ञानिक गण भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य उच्च तकनीकों के प्रयोग एवं अधिक उत्पादन लेने के कारण मृदा में संतुलित मात्रा में पोषक तत्वों की कमी होने से फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में उत्तरोत्तर कमी होने लगी है। मृदा की गुणवत्ता में सुधार एवं पोषक तत्वों के सही मूल्यांकन हेतु “मृदा स्वास्थ्य कार्ड” अति आवश्यक है। इसके आधार पर मिट्टी में उपलब्ध मुख्य एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों की स्थिति का पता चल सकेगा। जिसका उपयोग आगामी फसलों में करके फसलों से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके साथ ही लम्बे समय तक मृदा की उर्वरता बनी रहेगी। कुल 536 मिट्टी के नमूनों की जाँच करके ग्रिंड के हिसाब से जी.पी.एस. पद्धति से जोड़ा जा चुका है। इस प्रयास से किसान के खेत की मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों का पता चल सकेगा। जिसका उपयोग कर फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होगी और किसान खुसहाल होगा।



उपलब्धियाँ

कृषक प्रक्षेत्र प्रदर्शन

- धान की कटाई के पश्चात् हैपीटवॉसीडर का उपयोग करके गेहूँ की सीधी बोनी करने से उत्पादन में 13.9 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- चना प्रजाति जे.जी.-63 की ऊँची मेड़ पर बोनी (रज्ड बेड प्लांटिंग) पद्धति से 20 हे. क्षेत्रफल में 50 किसानों के प्रक्षेत्र पर की गई।
- सरसों की उन्नत प्रजाति पूसा अग्रणी का प्रदर्शन 20 हे. क्षेत्र में 50 कृषकों के प्रक्षेत्र पर, बोनी की विधि, बीज उपचार एवं फसल सुरक्षा को ध्यान में रखकर किया गया जिससे उत्पादन में 92 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- अलसी प्रजाति जे.एल.एस. 9 की बोनी सम्पूर्ण आदान सहित 24 हे. क्षेत्र में कुल 60 किसानों के यहां की गई। जिसमें बोनी की विधि बीज उपचार एवं फसल सुरक्षा के उपायों को अपनाते हुए उत्पादन में 43.3 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- रवी मौसम में देरी से टमाटर की बोनी करने हेतु रेज्ड-बेड पर पालीथीन मल्व का उपयोग करके 1 हे. क्षेत्र में 5 किसानों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 35.86 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- दुधारू पशुओं को गुणवत्ता युक्त चारा (बरसीम, भूसा, दाना) के उपयोग हेतु बरसीम की उन्नत प्रजाति जे.बी.-1 का प्रदर्शन 2 हे. क्षेत्र में 5 किसानों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 23.09 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- भैंस के नवजात शिशु को बाह्य परजीवीयों से बचाने हेतु पिपराजीन दवा का उपयोग प्रदर्शन के रूप में 5 शिशुओं पर किया गया जिससे वर्तमान शिशु मृत्यु दर 35 प्रतिशत की तुलना में दवा उपयोग होने पर शून्य पायी गई।
- बटरी की उन्नत प्रजाति प्रकाश का प्रदर्शन सम्पूर्ण तकनीक के साथ 20 हे. क्षेत्र में कुल 50 किसानों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 36.1 की वृद्धि आंकी गई।
- गेहूँ की उन्नत प्रजाति जी.डब्ल्यू. 322 का प्रदर्शन 30 हे. क्षेत्र को कुल 75 किसानों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 20.3 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।



प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अक्टूबर-दिसम्बर 2015		जनवरी-मार्च 2016	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
फसल उत्पादन	3	62	1	24
उद्यानिकी	5	108	1	20
कृषि में महिलाओं की भागीदारी	3	62	5	114
कृषि विस्तार	1	20	1	20
पौध रोग विज्ञान	—	—	1	22
मृदा विज्ञान	2	42	1	20
पशुपालन	3	65	1	20

ग्रामीण युवाओं/नव युवतियों हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अक्टूबर-दिसम्बर 2015			जनवरी-मार्च 2016		
	संख्या	अवधि	लाभार्थी	संख्या	अवधि	लाभार्थी
मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण	1	10	20	—	—	—
बेकरी उत्पाद तैयार करने की व्यावसायिक प्रशिक्षण	1	10	20	—	—	—
सिलाई-कढ़ाई पर व्यावसायिक प्रशिक्षण	—	—	—	1	30	20
फल-सब्जी परिरक्षण पर व्यवसायिक प्रशिक्षण	—	—	—	1	10	20

अन्य विस्तार गतिविधियाँ

कार्यक्रम	अक्टूबर-दिसम्बर 2015		जनवरी-मार्च 2016	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
किसान संगोष्ठी	3	89	3	72
कार्यशाला	1	80	—	—
समूह चर्चा	2	60	3	86
वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र भ्रमण	18	180	22	266
केन्द्र पर किसानों का भ्रमण	80	2400	84	2580
फिल्म सीडी शो	6	144	3	68
प्रक्षेत्र दिवस	2	128	—	—
आकाशवाणी वार्ता	1	—	—	—
कृषि प्रदर्शनी	2	4500	1	1500
साहित्य प्रकाशन	1	1000	2	2000
प्रक्षेत्र सलाह सेवा	6	148	6	162
निदानात्मक सर्वे भ्रमण	2	30	—	—
प्रक्षेत्र दिवस	1	62	1	88

स्वस्थ मृदा हेतु - मिट्टी परीक्षण आवश्यक

उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय प्रबंधन मण्डल सदस्यों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर प्रबंध मण्डल के सम्माननीय सदस्य श्री सुभाष भाटिया एवं डा. अविनाश खत्री द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर में स्थापित फल-सब्जी कैफेटेरिया कुढ़-मेंड पद्धति से पोली मल्टि एवं टपक सिंचाई पद्धति का उपयोग करते हुए अदरक, शिमला मिर्च, बैंगन, टमाटर, लौकी, गिल्ली, करेला आदि सब्जियों के उन्नत उत्पादन तकनीकों के साथ फलदार पौधों अनार, अमरूद, इमली, चीकू एवं कंचुआ खाद उत्पादन प्रदर्शन ईकाइयों के साथ केन्द्र द्वारा स्थापित किसान कार्नर का भी अवलोकन किया गया।



विश्व खाद्य दिवस का आयोजन

खेती को लाभ का धन्धा बनाने खाद्यान्न फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में सतत वृद्धि हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर प्रयत्नशील है। खाद्यान्न फसलों के उत्पादन, संरक्षण एवं प्रसंस्करण हेतु किसानों में जागरूकता लाने हेतु 16 अक्टूबर 2015 को "विश्व खाद्य दिवस" का आयोजन किया गया। जिससे किसानों को खाद्यान्न उत्पादन के साथ ही भण्डारण व अन्य कारणों से आनाजों की बर्बादी को रोकने के उपायों पर चर्चा की गई ताकि खाद्यान्न सुरक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता लाया जा सके।



माननीय कुलपति जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय द्वारा मुख्यमंत्री खेत तीर्थ का भ्रमण

मुख्यमंत्री खेत तीर्थ "योजना के तहत किसानों को खेती के प्रति जागरूक करने हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा फल-सब्जी कैफेटेरिया, वर्मी खाद उत्पादन ईकाई व फसल कैफेटेरिया की प्रदर्शन ईकाईयां स्थापित की गई है जिसमें जिले व प्रदेश सहित अन्य राज्यों से भ्रमण दल के रूप में कुल 4300 कृषक/कृषक महिलाओं एवं अधिकारियों द्वारा भ्रमण कर

प्रदर्शित तकनीक का अवलोकन किया गया। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. व्ही.एस. तोमर ने केन्द्र द्वारा प्रदर्शित तकनीकों का अवलोकन किया तथा किसानों के लिए हितकर बताया।



ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु बेकरी प्रशिक्षण

ग्रामीण महिलाओं के कौशल विकास एवं स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर उन्हें आत्म निर्भर बनाने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा बेकरी बनाने की तकनीक पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिससे आस-पास के गांवों की कुल 20 महिलाओं ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा स्वरोजगार के रूप में अपनाएने की बात कही।



आदर्श सांसद ग्राम कोहला में फलदार पौधों का रोपण

जबलपुर जिले के सांसद श्री राकेश सिंह द्वारा अंगीकृत आदर्श सांसद ग्राम कोहला में कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा पौध रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। फलदार पौधों में आम की उन्नत प्रजाति आम्रपाली के 30 पौधे, अमरूद इलाहाबाद सफेदा के 40 पौधे एवं नींबू की प्रजाति "कागजी लाइम के 30 पौधों का रोपण कराया गया।



जल संरक्षण एवं शुद्धि करण आवश्यक

अप्रैल माह के कृषि कार्य

- रबी की कटाई के उपरांत खाली खेतों की गहरी जुताई करें ।
- खेत का पानी खेत में गांव का पानी गांव में रोकने के उपाय करें ।
- देशी बेर की झाड़ियों में कलम बांधने हेतु कटाई-छटाई करें ।
- आम व नींबू वर्गीय पौधों में संरक्षण के उपाय अपनायें ।
- मिर्च की तैयार पौध की रोपाई करें व उर्वरकों की आधार मात्रा का प्रयोग करें ।
- बीज के लिए तैयार फसल की अलग से गहाई करें ताकि दूसरी किस्मों से मिलावट न हो सके ।
- टमाटर व बैंगन की फसलों में पौध संरक्षण का कार्य करें एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई व खड़ी फसल में नत्रजन उर्वरक का प्रयोग करें ।
- श्रेशर मशीन पर कार्य करते समय विशेष सावधानियाँ बरते ताकि दुर्घटना से बचा जा सके ।
- अनाज के सुरक्षित भण्डारण हेतु पुरानी कोठियों की अच्छी तरह से सफाई कर अनुशंसा की गई कीटनाशी दवा का छिड़काव करें ।
- अपने खेत से प्राप्त मिट्टी के नमूने जांच हेतु परीक्षण प्रयोग शाला में भिजवायें ।
- पशुओं को कृमि नाशक दवा पिलायें तथा एंथ्रेक्स रोग का टीका लगवाएं ।

मई माह के कृषि कार्य

- जायद में बोई गई मूंग, उड़द तथा सब्जी फसल में सिंचाई करें । यदि उड़द, मूंग की फलियाँ पक गई हो तो उनकी तुड़ाई करें ताकि फलियों के चटकने से नुकसान न हो सकें ।
- धान की नर्सरी लगाने हेतु खेत की तैयारी करें ।
- भू एवं जल संरक्षण हेतु खेतों की मेढ़ बन्दी व अन्य कार्य करें ।
- फलदार पौधों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा छोटे फलदार पौधों को लू से बचाने के लिए टटिया बांधे ।
- फलदार पौधे लगाने हेतु निश्चित दूरी पर गड्डों की खुदाई करें ।
- सब्जियों में कीट एवं रोग की रोकथाम करें ।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च में सिंचाई तथा नत्रजन उर्वरकों का प्रयोग करें ।
- ज्वार, मक्का लोबिया हरे चारे हेतु लगावें ।
- पशुओं में बाह्य पर परजीवियों से बचाव हेतु दवाई छिड़के व लगाएं ।

जून माह के कृषि कार्य

- खरीफ फसलों की बुवाई हेतु खेत की तैयारी करें, उन्नत बीज, खाद आदि की अग्रिम व्यवस्था करें ।
- पाला संभावित क्षेत्रों में मध्यम समय में पकने वाली अरहर प्रजातियों की बोनी जल्दी करें ।
- धान की नर्सरी कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट के उपयोग से तैयार करें ।

- वर्षा शुरू होने पर सोयाबीन की बोनी कूड़-मेढ़ पद्धति से करें ।
- दलहनी फसलों के बीज की बोनी पूर्व कीटनाशक दवा थाइयोमिथाक्सिन से उपचारित करें ।
- बेर की काटी गई झाड़ियों की नई फुटान पर उन्न किस्मों के कलम लगायें ।
- अमरूद एवं अनार के पौधों में उम्र के हिसाब से नत्रजन उर्वरक का उपयोग करें ।
- आम व नींबू वर्गीय फल वृक्षों में 4-5 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें व नत्रजन उर्वरक की शेष आधी मात्रा का उपयोग करें ।
- पशुओं में गलघोटू एवं लंगड़ा बुखार से बचाव हेतु टीका लगवाएं ।

अन्य गतिविधियाँ



प्रति

बुक-पोस्ट

Eshwar Graphics © 2412326

प्रकाशक : डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक
संकलन एवं संपादन : डॉ. दिनेश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि विस्तार)
संपादन सहयोग : डॉ. मोनी थॉमस, डॉ. एस.बी. अग्रवाल, वाय.एम. शर्मा, डॉ. बी.पी. बिसेन
 डॉ. रश्मि शुक्ला, डॉ. नीलू विश्वकर्मा, डॉ. ऋचा सिंह, डॉ. प्रमोद शर्मा, श्रीमती जीजी ऐनी अब्राहम